सूत उवाच—

व्यासस्य वचनं श्रुत्वा ऋषयस्ते तपोधनाः। व्यासं धर्मार्थतत्त्वज्ञं पप्रच्छुर्नृपसत्तम ॥१॥

ऋषय ऊचुः—

श्रुतं मानसमाहात्म्यं त्वत्प्रसादात्तपोधन। अधुना श्रोतुमिच्छामः खण्डाख्यानं सुविस्तरम् ॥२॥

व्यास उवाच—

नन्दपर्वतमारभ्य यावत् काकगिरिः स्मृतः। तावद्वै मानसः खण्डः ख्यायते मुनिभिर्द्विजाः॥३॥
संक्षेपेण महाभागाः कथयामि न संशयः। 'पश्चिमाभिमुखः साक्षात् हिमाद्रिः ख्यायते बुधैः'॥४॥
तस्य दक्षिणभागे वै नाम्ना नन्दगिरिः स्मृतः। तत्र नन्दा महादेवी पूज्यते त्रिदशैरपि ॥५॥
तां दृष्ट्वा हि नरैः[1] सम्यक् ऐश्वर्यमिह लभ्यते। नास्ति नन्दासमा देवी भूतले वरदा शुभा ॥
[2]नन्दगोपगृहे देवी अवतीर्य न संशयः। कंसेन पोथिता पुण्या शिलापृष्ठे[3] यतव्रताः ॥७॥
जगामाकाशमार्गेण पुण्यं[4] सा नन्दपर्वतम्। ततः प्रभृति वै विप्राः पूज्यते त्रिदशैरपि ॥८॥
नन्दां सम्पूज्य मनुजाः[5] पातकान् वितरन्ति हि[6]। नन्दाक्षेत्रसमं क्षेत्रं न पश्यामि द्विजोत्तमाः॥
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं भवति दर्शनात्। तस्मात् कोऽन्यतमो विप्राः क्षेत्रोऽस्ति भुवमण्डले ॥
यत्रैका ब्राह्मणी काचिन् मेनका नाम नामतः। सम्पूज्य योगमायां तां[7]पुंश्चली सा दिवं गता ॥

Essence Of Astrology

सूतजी ने कहना आरम्भ किया—राजन्! महर्षि व्यास की वाणी सुनकर उन तपस्वी ऋषियों ने धर्म और अर्थ के तत्त्ववेत्ता व्यासजी से पुनः कहा ॥ १ ॥

ऋषियों ने कहा—तपोधन! आपकी कृपा से 'मानस' का माहात्म्य सुना। अब हम विस्तार-सहित 'मानसखण्ड' का वृत्तान्त सुनना चाहते हैं ॥ २ ॥

व्यासजी ने उत्तर दिया—मुनिवरों! **नन्द पर्वत से आरम्भ कर काकगिरि तक मानसखण्ड का विस्तार बतलाया गया है।** उसका मैं संक्षेप से निर्वचन कर रहा हूँ। विद्वानों ने **महाहिमालय को पश्चिमाभिमुख बतलाया है।** उसके दक्षिण की ओर 'नन्दगिरि' है। वहाँ **नन्दादेवी** देवों से पूजित हो विराजमान हैं। उनके दर्शन-मात्र से मनुष्य ऐश्वर्यवान् हो जाते हैं। इस भूमण्डल में नन्दा के सदृश वरदायिनी और कोई नहीं है। हे व्रतपरायण मुनियों! वह देवी नन्दगोप के घर में जन्म लेकर कंस के द्वारा सौभाग्यशाली शिलापृष्ठ पर पटकी जाती हुई आकाश-मार्ग से पुण्यात्मा नन्दपर्वत पर जा पहुँचीं। तब से, हे ऋषिवरों! वे देवों से भी पूजित हो रही हैं। नन्दा की पूजा कर मनुष्य अपने पापों से रहित हो जाते हैं। नन्दाक्षेत्र के समान कोई दूसरा क्षेत्र अश्वमेध-यज्ञ की तरह फलदायक नहीं है। हे ब्राह्मणों! तब आप

---

१. 'मानवैः' इति 'क' 'ख'। २. 'पुण्यशिलापृष्ठे' इति 'क' 'ख'।
३. नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ (मार्कण्डेय-पुराणम्) ४. 'विन्ध्यात्' इत्यर्थः। ५. 'मनसा' इति 'ङ' पुस्तके। ६. 'पातकानि तरन्ति हि' इति 'क' पुस्तके। ७. 'वै' इति 'क'।

Scanned with CamScanner

ऋषय ऊचुः—

कथं सा ब्राह्मणी ब्रह्मन् पुंश्चली धर्ममास्थिता । कथं ज्ञातवती नन्दां पूजयामास तां कथम् ।१२।

व्यास उवाच—

पुरा कृतयुगस्यादौ पुलस्त्यस्य कुलोद्भवा । बभूव ब्राह्मणी काचिन्मेनका नाम नामतः ॥१३॥
सुरूपा सुविशालाक्षी रूपेणाप्रतिमा भुवि । पतितां भूतले साक्षात् चन्द्रकान्तिमिवापराम् ।१४।
दृष्ट्वा तां पोषयामास पिता तस्या द्विजोत्तमाः । वर्धमाना पितुर्गेहे स्त्रीचिह्ना यौवने स्थिता।
रूपलावण्यसंपन्ना बभूव वरवर्णिनी । पिता तस्यास्तदा विप्रास्तां दृष्ट्वा यौवने स्थिताम् ।१६।
ददौ विप्राय चाग्र्याय अत्रिगोत्रोद्भवाय च । सुतृप्ताय[1] सुयोग्याय सन्तनाख्याय वै द्विजाः ।१७।
विवाहविधिना सोऽपि समुद्वाह्य तदा द्विजाः । ययौ सुशिविकारूढस्तया सह यतव्रतः[2] ॥१८॥
तस्यै दायादिकं सर्वं दत्त्वा स द्विजसत्तमः । तयोः प्रास्थानिकं पुण्यं मङ्गलं च चकार ह ॥१९॥
सन्तनोऽपि महाभागाः[3] स्वगृहं प्राप्य सुव्रतः । रेमे स सुचिरं कालं सुन्दर्या प्रियया सह ।२०।
कालेन स द्विजो विप्राः संस्नातुं सरयूं गतः । तां विहायानवद्याङ्गीं स्वाश्रमे सुविसर्जिते ।२१।
निममज्ज ततः पुण्यां सरयूं ब्राह्मणोत्तमः । सुस्नानविधिना विप्रा ऋचाभिश्च समाहितः ।२२।
ततो दैवेन योगेन निमज्जन्तं द्विजं द्विजाः । गृहीत्वा जलमध्यं वै मकरः प्रविवेश ह ॥२३॥
मज्जमानं द्विजं दृष्ट्वा जनानां तत्र वासिनाम् । हा हेति सुमहानासीद् वज्रपातमिवापरम् ॥

Essence Of Astrology

ही बतलायें कि इस भूमण्डल में और कौन सा ऐसा स्थान है ? यहाँ पर ही मेनका नाम की एक ब्राह्मणी ने पुंश्चली होते हुए भी योगमाया की कृपा से स्वर्ग प्राप्त किया ॥ ३-११ ॥

(इसे सुनकर) **ऋषियों ने पुनः जिज्ञासा की**—ब्रह्मन् ! वह पुश्चली ब्राह्मणी किस प्रकार धर्म में प्रवृत्त हुई एवं नन्दा को किस तरह जान पाई। उसने किस विधि से नन्दा का पूजन किया ? ॥ १२ ॥

व्यासजी ने इसका उत्तर दिया—प्राचीन काल में सत्ययुग के आरम्भ में पुलस्त्य के कुल में उत्पन्न हो वह ब्राह्मणी मेनका नाम से प्रसिद्ध हुई। वह रूपवती एवं विशालाक्षी थी। वह अनवद्य सुन्दरी इस भूमण्डल पर दूसरी चन्द्रकान्ति ही उतरी थी। हे ऋषिश्रेष्ठो ! उस रूपवती को इस प्रकार पाकर (देखकर) उसके पिता ने उसका पालन-पोषण किया। इस तरह पिता के घर में बड़ी होती हुई वह युवती हो चली। रूप और सौन्दर्य से सम्पन्न होते हुए देखकर उसके पिता ने अत्रि-कुल में उत्पन्न सन्तन नामक श्रेष्ठ ब्राह्मण के साथ सन्तोष पूर्वक उसका विवाह कर दिया। तब उस संयमी ब्राह्मण ने पालकी पर बैठ मेनका के साथ गृह-प्रवेश किया। (इसके पूर्व मेनका के पिता ने) गृहस्थी के उपयुक्त समग्र सामग्री आदि दे उसकी इस मङ्गलमयी यात्रा का प्रबन्ध कर दिया। तदनन्तर, ऋषिवरों ! सदाचारी सन्तन ने भी अपने घर पहुँच कर उस सुन्दरी के साथ रमण किया। कुछ समय उपरान्त वह सरयू तट पर स्नान के लिए गया, किन्तु वह अपनी युवती पत्नी को अकेले घर पर ही छोड़ आया। उसके विधिपूर्वक वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ स्नान करते हुए दैववश एक नाके ने जल के

---

१. 'सुतृप्तये' इति 'क' पुस्तके। 'सुतृपाय' इति 'ख'। २. 'यतव्रताः' इति 'ङ'।
३. 'महाभागः' इति 'क'।

Scanned with CamScanner

ततः सा मेनका साध्वी जनौघैः समुदाहृतम् । तं सरय्वां निपतितं पतिं पञ्चत्वतां गतम् ॥२५॥
शुश्राव वचनं विप्रा वज्रपातमिवापरम् । श्रुत्वा तं सुभृशं दीना बभूव वरवर्णिनी ॥२६॥
मतिं चक्रे तदा विप्रा गन्तुं सा पतिना सह । अन्तर्वत्नीं तु तां ज्ञात्वा निषेधं चक्रिरे जनाः ।२७।
सा निषिद्धा द्विजैर्विप्रा वेदवेदाङ्गपारगैः । वर्जिता सा सुहृन्मित्रैर्न ययौ पतिना[1] सह ॥२८॥
ततस्तस्यानुजो विप्राश्चक्रे तस्यौर्ध्वदैहिकम् । वेदादिष्टेन विधिना ब्राह्मणैः सह सुव्रतः ॥२९॥
वैधव्यं प्राप्य सा विप्रा दैवयोगेन मेनका । सुषुवे दशमे मासि पुत्रं देवसुतोपमम् ॥३०॥
पतिव्रतपरा भूत्वा पुपोष तं सुतं सती । शासिता बन्धुवर्गेण शिक्षिताऽपि महत्तमैः ॥३१॥
कालेन साऽनवद्याङ्गी भिल्लं ब्राह्मणरूपिणम्[2] । ददर्श गृहमायान्तं साक्षात्कल्पतरूपमम् ॥३२॥
तमातिथ्येन विधिना पूजयामास सा सती । तस्यातिथ्यं महाभागाः स वर्णी प्रतिगृह्य वै ॥३३॥
रात्रौ तस्या गृहे पुण्ये उवास स वनेचरः । ततोऽर्धरात्रौ तां साध्वीं जगृहे स वनेचरः ॥३४॥
सुप्तां पर्यङ्कमध्ये वै शिशुना सह शोभनाम् । तां नीत्वा स ययौ विप्रा हिमालयतटे शुभे ॥३५॥
ततो देवर्षिगन्धर्वैः सेविते सुमनोहरे । स तत्र वरवर्णिन्या तया सह द्विजोत्तमाः ॥३६॥
रेमे च सुचिरं कालं स्वर्णभूषणभूषितः । प्रत्यहं पूजयामास स नन्दां ब्राह्मणीपतिः ॥३७॥
तस्मै नन्दा महादेवी स्वर्णभारं दिने दिने । ददौ तुष्टा जगद्धात्री नन्दपर्वतवासिनी ॥३८॥
प्रातोत्थाय[3] व्रजन्तं तं नीत्वा गन्धाक्षतादिकम् । गृहीत्वा स्वर्णभारं वै प्रत्यायान्तं दिने दिने ॥
दृष्ट्वा सा ब्राह्मणी विप्रास्तं पप्रच्छ वनेचरम् ॥३९॥

Essence Of Astrology

भीतर उसे खींचा । इस तरह डूबते हुए देख समीपस्थ लोगों में हाहाकार मच गया । वह भी ऐसा कि मानो उन पर वज्रपात ही हुआ ही । पतिव्रता मेनका ने उस कोलाहल को सुनते हुए सरयू तट पर वज्रपात सदृश पति के मरण को ज्ञात कर उस दुःख से कातर होते हुए पति को सहगामिनी (सती) होने का निश्चय किया । किन्तु गर्भवती होने के कारण वैदिक विद्वानों, मित्रों आदि ने उसे ऐसा करने से मना किया । अतः वह पति की सहगामिनी नहीं हुई । तब, हे ऋषिवरों ! उसके सदाचारी छोटे भाई ने सन्तन की वैदिक रीति से और्ध्वदैहिक क्रिया की । वैधव्य प्राप्त कर दसवें महीने उसने देवपुत्र के समान पुत्र को जन्म दिया । पतिपरायणा सती-साध्वी मेनका ने अपने पुत्र का पालन-पोषण किया । बन्धु-बान्धवों से अनुशासित एवं महनीय जनों से अनुशासित होते हुए भी उस सुन्दरी ने एक दिन अपने यहाँ कल्पवृक्ष के समान ब्राह्मणरूपधारी भील को आते हुए देखा । मुनिवरों ! उस साध्वी ने उसका आतिथ्य-सत्कार किया और उस ब्रह्मचारी वेषधारी ने उसे स्वीकार करते हुए वहाँ रात्रिवास किया । तब आधी रात के समय अपने पुत्र के साथ पलंग पर सोई हुई साध्वी को जगाकर वह भील हिमालय-तट पर ले गया । विप्रवरो ! तत्पश्चात् देव-ऋषि-गन्धवादि से सेवित उस रमणीय स्थान पर भूषणादि से अलङ्कृत उस वनेचर ने चिरकाल पर्यन्त रमण किया । वह ब्राह्मणी-पति प्रतिदिन नन्दा की पूजा करता था । जिसके फलस्वरूप प्रसन्न होकर पर्वतवासिनी जगन्माता नन्दा उसे प्रतिदिन सोना दिया करती थीं । इस तरह प्रतिदिन पूजासम्भार ले जाते हुए तथा सोना प्राप्त कर वापस आते हुए देख ब्राह्मणी ने उस वनेचर से पूछा ॥१३-३९॥

१. नाभाव आर्षः । २. 'ब्राह्मणमायतम्' इति 'क' । ३. 'प्रातरुत्थाय' इत्यपेक्ष्यते ।

Scanned with CamScanner

मेनका उवाच—

गन्धपुष्पादिकं नीत्वा कुत्र वै गम्यते त्वया। कस्मादानीयते भारं [1]पूर्णस्वर्णमयं तथा ॥४०॥
यदि ते सुप्रिया चास्मि तर्हि सत्यं वनेचर। कथयस्व विशेषज्ञ त्वामहं प्रणताऽस्मि वै ॥४१॥

व्यास उवाच—

तस्या वचनमाकर्ण्य स भीतो ब्राह्मणीपतिः। उवाच मेनकां पापः स्मरन्तीं पातकं बहु ॥४२॥

भिल्ल उवाच—

इतो यो दृश्यते भद्रे पुण्यो नन्दगिरिः शुभः ॥४३॥
तत्र नन्दा महादेवी जागर्ति भुवनेश्वरी। पूजयामि महाभागां नन्दां पर्वतवासिनीम् ॥४४॥
गन्धपुष्पाक्षतैः शुद्धैर्वस्त्रैश्च विविधैरपि। संप्रसन्ना[2] महाभागा स्वर्णभारं दिने दिने॥
प्रयच्छति न सन्देहः सत्यं ते व्याहृतं मया ॥४५॥

व्यास उवाच—

इति भिल्लस्य वचनं श्रुत्वा सा मेनका द्विजाः। विस्मयोत्फुल्लनयना पप्रच्छ पुनरेव हि ॥४६॥

मेनका उवाच—

सा केन विधिना भिल्ल पूज्यते परमेश्वरी। कथं तुष्टा मनुष्याणां वरं ते संप्रयच्छति ॥४७॥

व्यास उवाच—

स तया परिपृष्टो वै यथापूर्वं वनेचरः। जगाद वचनं भूयस्तां प्रियां चारुभाषिणीम् ॥४८॥

Essence Of Astrology

मेनका ने कहा—तुम गन्ध-पुष्पादि लेकर प्रतिदिन कहाँ जाते हो तथा यह सोने का ढेर कहाँ से लाते हो ? यदि मैं तुम्हारी प्रिया हूँ तो, हे वनेचर ! तुम सच बतलाओ। मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ ॥ ४०–४१ ॥

व्यासजी ने फिर कहा—उस ब्राह्मणी की बातें सुनकर वह ब्राह्मणीपति कुछ भयभीत हुआ। फिर भी उस पापी ने अपने पापों का स्मरण करती हुई मेनका से इस प्रकार कहा ।४२।

भील बोला—भद्रे ! यहाँ से कुछ दूर पुण्यस्थल नन्दगिरि दिखाई पड़ता है। वहाँ महादेवी भुवनेश्वरी नन्दा जागरूक हैं। मैं गन्ध-पुष्प-अक्षत एवं विविध वस्त्रादि पूजा-सामग्री से पर्वतवासिनी नन्दा की पूजा करता हूँ। प्रसन्न होकर वह मुझे प्रतिदिन स्वर्णराशि निःसन्देह देती हैं। यह मैंने तुमसे सच कहा है ॥ ४३–४५ ॥

(तब) व्यासजी ने ऋषियों से कहा—भील की इन बातों को सुनकर मेनका ने आश्चर्यचकित हो फिर पूछना आरम्भ किया ॥ ४६ ॥

मेनका बोली—हे भील ! उस भगवती की पूजा करने का क्या विधान है ? मनुष्यों पर वे कैसे प्रसन्न होती हैं ? तुमको वर किस प्रकार देती हैं ? ॥ ४७ ॥

व्यासजी ने पुनः कहा—मेनका द्वारा पूछे जाने पर उस मृदुभाषिणी को वनेचर ने पहले की तरह उत्तर दिया ॥ ४८ ॥

---

१. 'पूर्णम्' इति 'क' पुस्तके। 'भारः पूर्णः स्वर्णमयस्तथा' इत्यपेक्ष्यते।
२. 'सा प्रसन्ना' इति 'क' पुस्तके। 'संपन्ना' इति 'ग' पुस्तके।

Scanned with CamScanner

भिल्ल उवाच—

योऽसौ नन्दगिरिः साक्षात् मया ख्यातो हि मेनके । तत्र शिखरयोर्मध्ये पुण्यो नन्दासरः स्मृतः।
निमज्ज्य विधिवत्तत्र नन्दिकेशं हरं व्रजेत् । नन्दिकेशं हरं तत्र सम्पूज्य विधिपूर्वकम् ॥५०॥
ततोऽधिरुह्य शिखरं नन्दां सम्पूज्य मेनके । ऐहिकामुष्मिकं चैव फलं तुष्टा प्रयच्छति ॥५१॥

व्यास उवाच—

श्रुत्वा नन्दाप्रभावं सा मेनका द्विजसत्तमाः । निष्कृतिस्तत्र पापानां भविष्यति न संशयः ॥५२॥
इति संचिन्त्य मनसा ययौ साऽपि दिने दिने । स्नात्वा नन्दासरे पुण्ये सम्पूज्य च महेश्वरम्[1]।५३।
प्रार्थयन्ती महामायामित्युवाच यतव्रता । नारायणि महामाये हिमाद्रितनये शुभे ॥५४॥
पुंश्चल्या धर्महीनायाः पातकान् मे विनाशय । इति देवीं महामायां प्रार्थयन्ती यतव्रता ॥५५॥
निनाय कालं सुचिरं देवीपूजनतत्परा । ततः कालेन सा विप्राः कृतान्तवशगाऽभवत् ॥५६॥
नीता याम्यैर्यमपुरं पुंश्चली पापकारिणी । ततः कालीं महाभागां नन्दपर्वतवासिनीम् ॥५७॥
जगाद [2]नन्दिका वाचं गच्छ देवि यमं प्रति । तत्र विज्ञाप्य राजानं धर्माधर्मविचारकम् ॥५८॥
[3]तामानयाबलां देवीं यमस्य वशवर्तिनीम् । मेनकां मे गृहे चाद्य मम भक्तिपरायणीम्[4]॥५९॥

व्यास उवाच—

ततः काली महामाया[5] भवानीवचनं शुभम् । प्रगृह्य प्रययौ तत्र यत्र वै स महायमः ॥६०॥
तत्र गत्वा महाभीमा सा काली घोरदर्शना । यमं विज्ञापयामास मेनकामुक्तिहेतवे ॥६१॥

Essence Of Astrology

भील बोला—मेनके ! मैंने जो तुमसे नन्द-पर्वत का वर्णन किया है, वहाँ पर दो शिखरों के मध्य 'नन्दासर' है । वहाँ विधिपूर्वक स्नान कर 'नन्दिकेश' महादेव की ओर जाना चाहिये । वहाँ शिवजी का पूजन कर शिखर पर चढ़ **'नन्दादेवी'** की पूजा करने से देवी प्रसन्न हो जाती हैं तथा वे इस लोक एवं परलोक से सम्बद्ध फल देती हैं ॥ ४९-५१ ॥

(तब) व्यासजी बोले—हे ऋषिवरों ! मेनका ने नन्दादेवी का यह प्रभाव जान तथा अपने पापों का निवारण सम्भव होना समझकर वहां प्रतिदिन जाना आरम्भ कर दिया । वह पवित्र नन्दासरोवर में स्नान कर व्रत रखते हुए नन्दिकेश का पूजन करती हुई भगवती की इस प्रकार प्रार्थना करने लगी—'नारायणि !, महामाये ! हिमालयकन्ये ! शुभे ! मुझ अधर्मी पुँश्चली के पापों को दूर करो' । इस प्रकार महामाया की प्रार्थना करती हुई व्रतपरायणा मेनका बहुत दिनों तक पूजन में तत्पर रही । ऋषिवरों ! फिर वह दैववश कालकवलित हो गई । पापी होने के कारण यमदूत उसे यमराज के पास ले गए । इस पर नन्दिका ने नन्दपर्वत-वासिनी काली को यमराज के पास जाने के लिए कहा कि वह धर्म और अधर्म के विचारक यमराश से निवेदन कर मेरी भक्ति करने वाली मेनका को आज ही वलपूर्वक ले आये ॥ ५२-५९ ॥

व्यासजी ने पुनः कहा—नन्दा की बात को सुनकर महामाया काली यमराज के पास

---

१. 'महेश्वरीम्' इति 'क' ।
२. 'चण्डिका' इति 'ग' । 'चन्द्रिका' इति 'घ' ।
३. 'तामानय बलाद् देवीम्' इति 'क' 'ख' ।
४. 'भक्तिपरायणाम्' इति 'क' पुस्तक ।
५. 'महाभागा' इति 'ख' ।

Scanned with CamScanner

काली उवाच—

धर्मराज महाराज शृणु दैत्ये[1] समागताम् । जानीहि सुविशालाक्षीं भवानीं हितकारिणीम्[2] ॥
यदाह सा जगद्धात्री तत्कुरुष्व न संशयः । त्वद्गणैर्मेनका नाम ब्राह्मणी तव शासने ॥६३॥
नीता सा वै कथं राजन् भवानीप्रियकारिणी ॥

यम उवाच—

शृणुष्व वचनं भद्रे मया वै समुदाहृतम् । पतिव्रतानां नारीणां वासो वै देवमण्डले ॥६४॥
पुंश्चलीनां च मे लोके निवासः कल्पितः पुरा । तस्मान्मच्छासने देवि[3] संस्थिता नात्र संशयः ।
यदेषा ब्राह्मणीभूत्वा जाता भिल्लस्य चाङ्गना । तस्मान्मच्छासने योग्या विद्यते नात्र संशयः॥
अपि तीर्थशतैर्वापि तथा यज्ञशतैरपि । कायक्लेशादिकैर्वापि पुंश्चली नैव शुध्यति ॥६७॥

काली उवाच—

नन्दासरस्य माहात्म्यं त्वया न ज्ञायते यम । तथैव पर्वते पुण्ये देवीपूजनजं फलम् ॥६८॥
किं न ज्ञातं त्वया पुण्यं देवीपूजनजं फलम् । ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते यत्र वै जनः ॥६९॥
तं नन्दपर्वतक्षेत्रं[4] किं न जानाति वै यमः ॥ ७० ॥
यत्र पर्वतरूपेण साक्षाद्देवो जनार्दनः । वर्तते[5] पर्वतक्षेत्रे किं न जानासि त्वं यम ॥७१॥

Essence Of Astrology

पहुँचो । भयंकर रूप धारण करती हुई काली ने यमराज से मेनका को अपने चंगुल से मुक्त करने के लिए (इस प्रकार) निवेदन किया ॥ ६०–६१ ॥

काली बोलीं—धर्मराज यम ! सुनो । मुझे तुम भक्तों की हितकर्त्री विशालाक्षी भवानी के दूतरूप में आई हुई जानो । जगन्माता की कही गई बातों को तुम निःसन्देह पूरा करोगे । तुम्हारे गण नन्दा की सेविका मेनका ब्राह्मणी को तुम्हारी आज्ञा से यहाँ क्यों ले आए हैं ? ॥ ६२–६३ ॥

(इस पर) यमराज ने उत्तर दिया – भद्रे ! मेरी बात सुनो । मैंने तो यह कहा है कि 'पतिव्रता स्त्रियों के लिए देवलोक में वास नियत है । केवल पुँश्चली स्त्रियों का वास पहले से ही यमलोक नियत है । निःसन्देह इसी लिये मेरे शासन में मेनका को रखा गया है । यह ब्राह्मणी होते हुए (दुराचारवश) भील की स्त्री बन गई । अतः यमलोक में रहने के लिए यह सर्वथा योग्य है । कारण यह है कि सैकड़ों तीर्थ, याग तथा तपश्चर्या करने पर भी पुंश्चली की शुद्धि सम्भव नहीं है' ॥ ६४–६७ ॥

(यम की वाणी को सुनकर) काली पुनः बोलीं—यमराज ! तुम नन्दासरोवर का माहात्म्य तथा नन्दा के पूजन का फल नहीं जानते । उस देवी के पूजन से ब्रह्महत्यादि पाप भी नष्ट हो जाते हैं । बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हें ऐसे नन्दपर्वत का ज्ञान नहीं है, जहाँ पर्वत के रूप में भगवान् विष्णु प्रतिष्ठित हैं । ऐसे पुण्यक्षेत्र का तुम्हें ज्ञान क्यों नहीं है ? ॥ ६८–७१॥

---

१. 'दैत्ये' इति 'ग' ।
२. 'जानीहि सुविशालाक्षी भवानी हितकारिणी' इति 'घ' पुस्तके ।
३. 'देवी' इति 'ख' । ४. 'नन्दसंज्ञकं क्षेत्रम्' इति 'घ' । ५. 'वर्वर्ति' इति 'क' ।

Scanned with CamScanner

व्यास उवाच—

इत्युक्त्वा तं तदा काली गृहीत्वा मेनकां ततः। लोहपाशैर्निबद्धां तां विमुच्य प्रययौ गिरिम् ॥
करग्रहणमात्रेण सा काल्या मेनका द्विजाः। दिव्यरूपधरा साक्षाद् विष्णोः श्रीरिव भासिता ॥
ततः काली समुत्पत्य यत्र नन्दा महेश्वरी। ययौ मेनकया सार्धं त्रिशूलवरभूषणा ॥७४॥
ततस्तां मेनकां देवी ददौ स्वर्गगतिं शुभाम्। अधिरुह्य विमानाग्रे सेविता नायिकागणैः[1] ॥
दृश्यतेऽद्यापि वै विप्रा मेनका स्वर्गमण्डले। भिल्लोऽपि कालवशगो भूत्वा कालेन वै द्विजाः ॥
ऐश्वर्यमतुलं चात्र भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान्। जगामान्ते शिवपुरं महामायाप्रसादतः ॥७७॥
इत्येतत्कथितं विप्रा नन्दाख्यानं सुविस्तरम्। आयुरारोग्यमैश्वर्यं सुखसम्पद्विवर्धनम् ॥७८॥
य इदं परमं पुण्यं नन्दामाहात्म्यमुत्तमम्। शृणुयाद् वा पठेद्वापि भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।७९।

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे मानसखण्डे नन्दामाहात्म्यं नाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥

Essence Of Astrology

व्यासजी ने पुनः कहा—तत्पश्चात् जंजीरों से जकड़ी हुई मेनका को काली ने विमुक्त किया तथा उसे पर्वत पर ले गई। हे ऋषिवरों! काली के हाथ का स्पर्श होते ही मेनका दिव्य रूप धारण कर साक्षात् लक्ष्मी के समान शोभित हुई। तब सुन्दर त्रिशूलधारिणी कालिका उस नन्दा को साथ ले महेश्वरी नन्दा के पास गईं और उसे विमान पर चढ़ाकर स्वर्ग प्राप्त कराया। अब भी वह मेनका अप्सराओं से सेवित स्वर्गमण्डल में दिखाई पड़ती है। कुछ समय बाद भील ने भी काल के वशीभूत हो महामाया की कृपा से शिवलोक प्राप्त किया। ऋषिवरों! मैंने आप लोगों से नन्दा का यह आख्यान विस्तार के साथ कहा है। यह श्रोताओं की आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, सुख तथा सम्पत्ति को बढ़ाने वाला है। इस पवित्र एवं श्रेष्ठ नन्दा-माहात्म्य को पढ़ने या सुनने वाला व्यक्ति भुक्ति तथा मुक्ति प्राप्त करता है ॥७२-७९॥

॥ स्कन्दपुराणान्तर्गत मानसखण्ड में वर्णित 'नन्दा'-माहात्म्य
नामक बाईसवाँ अध्याय समाप्त ॥

Scanned with CamScanner